

अतितृष्ण वि. (तत्.) 1. बहुत अधिक प्यासा 2. अत्यंत लोभी।

अतिथि पुं. (तत्.) 1. मेहमान, घर आया हुआ आगंतुक (जिसके आने का दिन निश्चित न हो) अभ्यागत 2. वह संन्यासी जो एक रात अर्थात् एक दिन (या तिथि) से अधिक कहीं न ठहरे।

अतिथि-क्रिया स्त्री. (तत्.) आतिथ्य, अतिथि की आवभगत।

अतिथिगृह पुं. (तत्.) शा.अर्थ अतिथियों के ठहरने के लिए बना भवन प्रशा. संस्थाओं के कर्मचारियों के लिए मुख्यालय से इतर स्थानों पर बने आवास (जहाँ उन्हें न्यूनतम किराया चुका कर समुचित सुविधाएं उपलब्ध होती हैं) guest house

अतिथिदेव पुं. (तत्.) अतिथि, जिसे देवता स्वरूप मानकर उसका यथोचित आदर-सत्कार किया जाए (अतिथिदेवो भव)।

अतिथिधर्म पुं. (तत्.) घर आए मेहमान (अतिथि) की यथोचित आवभगत करने का गृहस्थ का कर्तव्य।

अतिथिपूजन पुं. (तत्.) दे. अतिथि-पूजा।

अतिथिपूजा स्त्री. (तत्.) घर आए मेहमान (अतिथि) का यथोचित आदर-सत्कार, मेहमानदारी, अतिथिसत्कार।

अतिथिभवन पुं. (तत्.) दे. अतिथिगृह।

अतिथियज्ञ पुं. (तत्.) अतिथि का यथोचित आदर-सत्कार जो पंच महायज्ञों में से एक है।

अतिथिशाला स्त्री. (तत्.) दे. अतिथि-गृह।

अतिथि संपादक पुं. (तत्.) किसी ग्रंथ या पत्रिका के विशेषांक के संपादन-हेतु नियुक्त अवैतनिक कार्यालयेतर विशेषज्ञ।

अतिथिसत्कार पुं. (तत्.) घर आए मेहमान (अतिथि) के प्रति यथोचित आदरभाव सहित उस की खातिरदारी।

अतिथिसेवा स्त्री. (तत्.) दे. अतिथिसत्कार।

अतिदर्प पुं. (तत्.) अत्याधिक अभिमान वि. (तद्.) अत्यधिक अभिमानी।

अतिदर्शी वि. (तत्.) अत्यधिक दूरदर्शी, अत्यंत दूरदर्शी।

अतिदाता पुं. (तत्.) अत्यधिक दान देने वाला व्यक्ति।

अतिदान पुं. (तत्.) अत्यधिक दान।

अतिदाह पुं. (तत्.) बहुत अधिक ताप या जलन।

अतिदिष्ट पुं. (तत्.) 1. प्रभावित, आकृष्ट 2. दर्श. मीमांसा के अनुसार एक का धर्म दूसरे में आरोपित।

अतिदीप्त पुं. (तत्.) अतिशय प्रकाशमान।

अतिदीप्य वि. (तत्.) अतिशय प्रकाशित होने वाला।

अतिदुःसह वि. (तत्.) जिसे सह पाना बहुत कठिन हो, अत्यधिक असह्य।

अतिदुर्धर्ष वि. (तत्.) 1. जिसका दमन करना अत्यंत कठिन हो, अतिप्रबल, प्रचंड, बहुत उग्र 2. अत्यधिक उद्दंड, जो बहुत अहंकारी हो।

अतिदेय वि. दे. अतिकालदेय।

अतिदेश पुं. (तत्.) 1. एक का धर्म दूसरे पर आरोपित करना 2. निर्दिष्ट विषय के अतिरिक्त अन्य विषय पर भी लागू होने वाला नियम 3. सादृश्य, उपमा 4. निष्कर्ष 5. आत्मसात् करना।

अतिदेशक वि. आदेशकारी।

अतिदोष पुं. (तत्.) बहुत बड़ा दोष, अपराध।

अतिधन्वा पुं. (तद्.) अद्वितीय धनुर्धर।

अतिधेनु वि. (तत्.) जो अपने यहाँ पालित अधिसंख्य गायों के कारण प्रसिद्ध हो।

अतिनाटक पुं. (तत्.) नाटक का वह रूप जिसमें सामान्य कारण-कार्य सिद्धांत का अनुसरण करने की अपेक्षा संवेगात्मकता, भावात्मकता या अतिभावुकता पर अधिक बल दिया जाता है।